DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

MODERN HISTORY

Congress

Part -4

LIVE 10-07-2024 04:00 PM

मुस्लिम लीग एवं हिन्दू महासभा

मुस्लिम लीग

⇒ बंगाल विभाजन से भारतीयों की राष्ट्रीयता कमजोर होने के बजाय और भी मजबूत हुयी, इसलिए ब्रिटिश सरकार ने अन्य तरीकों से इस राष्ट्रीयता को तोड़ने का प्रयास किया। उसी के सहयोग से कांग्रेस और भारत के राष्ट्रवाद का पुरजोर विरोध करने वाली संस्था मुस्लिम लीग दिसम्बर 1906 में अस्तित्व में आयी।

⇒ 1 अक्टूबर 1906 – 35 मुस्लिमों का एक शिष्टमंडल आगा खां के नेतृत्व में शिमला में मिंटो से मिला।

(a) इस शिष्टमंडल ने मिंटो को मुसलमानों की राजभक्ति का विश्वास दिलाया और अपनी सुविधाओं की मांग की।

(b) मुसलमानों को उनके राजनीतिक महत्व और साम्राज्य की रक्षा में की गई सेवाओं के आधार पर व्यवस्थापिका सभाओं में स्थान देना।

(c) सरकारी नौकरी में मुसलमानों को वरीयता दी जाये।

(d) हाईकोर्ट और अन्य उच्च न्यायालयों में मुस्लिम न्यायाधीशों की नियुक्ति की जायें।

(e) पृथक निर्वाचक मंडल की स्थापना। (साम्प्रदायिक आधार पर)

⇒ वायसराय ने उनकी मांगों को जायज ठहराया और उसे पूरा करने का आश्वासन दिया, जिससे प्रोत्साहित होकर मुस्लिमों ने एक केन्द्रीय संगठन के निर्माण की बात सोची।

⇒ ढाका के नवाब सलीमुल्ला खाँ जो शिमला के प्रतिनिधिमंडल में नहीं जा सके थे, ने नवम्बर 1906 को 'ऑल इंडिया मुस्लिम कॉन्फेडरेसी' के गठन की योजना बनाई।

⇒ 30 दिसम्बर 1906 – ढाका में नवाब बकार उल मुल्क की अध्यक्षता में एक मीटिंग हुई, जिसमें लिए गए निर्णय के अनुसार इसी दिन 'आल इंडिया मुस्लिम लीग' नामक एक संस्था अस्तित्व में आई।

⇒ पहले का प्रस्तावित नाम 'आल इंडिया मुस्लिम कान्फेडरेसी' अस्वीकृत हो गया।

⇒ पहले अध्यक्ष – वकार उल मुल्क मुश्ताक हुसैन।
स्थायी अध्यक्ष – आगा खां

⇒ 30 दिसम्बर 1906 – आगा खां, ढाका के नवाब सलीमुल्ला, मोहसिन-उल-मुल्क और वकार-उल-मुल्क के नेतृत्व में 'ऑल इंडिया मुस्लिम लीग' अस्तित्व में आयी।

1 ⇒ 29-30 दिसम्बर 1907 – कराची में पहला अधिवेशन आयोजित हुआ। इसमें मुस्लिम लीग का संविधान बना।

⇒ 19 मार्च 1908 – अलीगढ़ में बैठक। (आगा खां स्थायी अध्यक्ष चुने गये)

2 ⇒ 30-31 दिसम्बर 1908 – अमृतसर में दूसरा अधिवेशन आयोजित हुआ। (अध्यक्ष – सैयद अली इमाम) पिछली बैठक में बनाया गया संविधान इसमें पारित हुआ।

⇒ मुस्लिम लीग का उद्देश्य कांग्रेस की नीतियों का विरोध करना और भारत के मुसलमानों में अंग्रेजी सरकार के प्रति वफादारी को बढ़ाना था।

3 ⇒ 1910 – मुस्लिम लीग का अधिवेशन दिल्ली में अरकोट के राजकुमार गुलाम मुहम्मद अली खां की अध्यक्षता में आयोजित हुआ।

⇒ इसमें लीग ने अपना मुख्यालय अलीगढ़ से लखनऊ ले जाने का निर्णय लिया।

⇒ मुस्लिम लीग का प्रारंभिक मुख्यालय अलीगढ़ था, परन्तु 1910 में इसे लखनऊ स्थानांतरित कर दिया गया।

हिन्दू महासभा का गठन –

⇒ मुस्लिम लीग की स्थापना के बाद हिंदुओं के एक सूक्ष्म वर्ग को एक ऐसे संगठन की आवश्यकता हुयी, जो सिर्फ और सिर्फ हिंदुओं के हितों की वकालत करे।

⇒ 1909 – पंजाब हिन्दू महासभा की स्थापना हुयी। इसकी स्थापना लालाचंद और बी॰एन॰ मुखर्जी ने की थी।

⇒ इस महासभा ने कांग्रेस के प्रति वही रुख अपनाया, जो कि मुस्लिम लीग ने अपना रखा था।

⇒ इसके संस्थापकों ने हिंदुओं से कांग्रेस की सदस्यता को त्यागने की अपील की।

⇒ उनका यह मानना था कि कांग्रेस मुसलमानों को खुश रखने के लिये हिंदू हितों की बलि चढ़ा रही है।

⇒ अप्रैल 1915 में कासिम बाजार के महाराजा की अध्यक्षता में 'अखिल भारतीय हिंदू महासभा' का गठन किया गया। लेकिन महासभा अपने क्रियाशील रूप में 1922 में आयी।

⇒ हिन्दू महासभा का नेतृत्व डॉ. मुंजे (वे प्रारंभिक काल में डॉ. हेडगेवार के मार्गदर्शक थे), पंडित मदनमोहन मालवीय (बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक), लाला लाजपत राय, भाई परमानंद और आर्य-समाजी स्वामी श्रद्धानंद (जो शुद्धि द्वारा मुसलमान बने हिंदुओं को वापस हिंदू धर्म में लाने की मुहिम के लिए प्रसिद्ध हुए) जैसे निर्भीक और दृढ़संकल्प विभूतियों के हाथ में रहा।

⇒ जब 1925 में लाला लाजपत राय इसके मुखिया बने तो महासभा ने आक्रामक हिंदू राष्ट्रीयता (जिसमें शुद्धि सम्मिलित थी) का कार्यक्रम अपनाया, किंतु इसके साथ ही धार्मिक और सामाजिक सद्भाव अपने प्रमुख लक्ष्यों में शामिल किए।

⇒ इन सभी गतिविधियों से हिंदुओं को भी संगठित करने वाली एक संस्था धीरे-धीरे भारतीय राजनीति में एक जगह बनाई।

Digvijay IAS

Thank you!